IARJSET ISSN (O) 2393-8021, ISSN (P) 2394-1588

International Advanced Research Journal in Science, Engineering and Technology

Impact Factor 8.066 ⁜ Peer-reviewed & Refereed journal ⁜ Vol. 13, Issue 7, July 2026

DOI: 10.17148/IARJSET.2026.13726

संत रैदास का साहित्यिक अवदान

कृति कुमारी

शोधार्थी (हिंदी विभाग), डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर (मध्य प्रदेश)

संत' शब्द संस्कृत भाषा से व्युत्पन्न है, यद्यपि संस्कृत में इसका प्रयोग बहुत कम मिलता है। आधुनिक इंडो-आर्य भाषाओं में, विशेषकर सगुण और निर्गुण भक्तिकालीन साहित्य में, 'संत' शब्द का व्यापक रूप से प्रयोग हुआ है। इस प्रकार, 'संत काव्य' से आशय उन कवियों और चिंतकों की काव्य-रचनाओं से है जिन्हें आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने निर्गुण परंपरा की 'ज्ञानाश्रयी' शाखा के अंतर्गत रखा है। प्राचीन काल से ही भारत की भूमि संतों, ऋषियों और आध्यात्मिक साधकों की पवित्र भूमि रही है। समस्त मानवता के कल्याण के लिए इन संतों और महापुरुषों का उद्देश्य मानव-हित का मार्ग प्रशस्त करना तथा सांस्कृतिक समन्वय को बढ़ावा देना रहा है। मध्यकालीन भक्ति आंदोलन के प्रमुख संतों में गुरु रविदास का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। स्वामी रामानंद के शिष्यों में संत रैदास का अग्रणी स्थान है। उन्हें ऐसे संत के रूप में देखा जाता है जिन्होंने समय की आवश्यकताओं के अनुरूप समाज को नई दिशा प्रदान की। आचार्य शुक्ल के अनुसार रामानंद जी के बारह शिष्यों में रैदास को भी एक माना जाता है, और वे चमार जाति के थे।[1] रामकुमार वर्मा के अनुसार, संत परंपरा में कबीर और रैदास समकालीन थे।[2] कुछ स्थानों पर यह स्पष्ट होता है कि संत रैदास कबीर को गुरु के समान बड़े भाई का सम्मान देते थे।

अनंतदास ने अपनी 'परिचई' में लिखा है-तब रैदास ने इस विषय पर विचार किया। गुरु-तुल्य कबीर उन्हें अत्यंत प्रिय थे।3 'कबीर परिचय' इन दोनों संतों का समाज पर गहरा प्रभाव आज भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। संत रैदास ने उस समय के पतनशील भारतीय समाज को धर्म का सहारा देकर उसका सुधार करने का प्रयास किया। परिणामस्वरूप, यद्यपि वे चमार जाति से थे, फिर भी उच्च वर्गों के लोग भी उनका अत्यंत सम्मान करते थे। रैदास चमार जाति से संबंधित थे। चमार समुदाय को अछूत माना जाता था और परंपरागत रूप से वे जूते बनाने, खेत जोतने तथा मरे हुए पशुओं को ढोने का कार्य करते थे। स्वयं रैदास ने भी अपनी जाति को निम्न बताया और अपने को चमार कहा। हमारी जाति नीची है, हमारे कर्म नीच हैं, और हमारा व्यवसाय नीच है।4 अपने समय के अन्य संतों की भाँति रैदास भी एक चिंतनशील संत थे, जो धार्मिक चेतना के प्रति गहराई से सजग थे, क्योंकि आधुनिक दृष्टिकोण में धर्म के बिना सामाजिक सुधार की कल्पना नहीं की जा सकती। समाज में प्रचलित संकीर्णता, असहायता और भेदभावपूर्ण दृष्टिकोण का त्याग करने के लिए रैदास ने भक्ति और धर्म के क्षेत्र में समान अधिकारों का समर्थन किया, जिसके माध्यम से सामाजिक समानता की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। सिंह इंद्रराज सिंह ने अपनी पुस्तक में लिखा है। संत रैदास ने परंपरा, रूढ़िवाद और रीति-रिवाजों में जो कुछ भी श्रेष्ठ था, उसका समन्वय किया और ऐसा दर्शन स्थापित किया जिसने हिंदू और मुस्लिम संस्कृतियों के बीच की विशाल खाई को पाटने में सहायता की। यह भारत में भावनात्मक एकता का महान संदेश था। कृष्ण, करीम, राम, हरि, राघवकृजब तक उन्हें एक नहीं माना जाता, वेद, कतेब, कुरान और पुराण स्वाभाविक रूप से एकत्व की बात नहीं करते।5 परमात्मा सर्वव्यापी है, परंतु जब तक मनुष्य अज्ञान की गुफा में डूबा रहता है, तब तक वह

IARJSET ISSN (O) 2393-8021, ISSN (P) 2394-1588

International Advanced Research Journal in Science, Engineering and Technology

Impact Factor 8.066 ⁜ Peer-reviewed & Refereed journal ⁜ Vol. 13, Issue 7, July 2026

DOI: 10.17148/IARJSET.2026.13726

ईश्वर का अनुभव नहीं कर सकता। मन इस संसार में भटकता रहता है, और अहंकार आसक्ति होने पर मनुष्य भ्रमित हो जाता है और अपनी दिशा-बोध खो देता है। संत रैदास इसी ज्ञान की प्राप्ति की बात करते हैं, जिसके द्वारा राम और गोविंद के नामों का सहारा लेकर तथा परम सत्य, ईश्वर, का स्मरण करके मनुष्य अज्ञान से उत्पन्न होने वाले मोहों से सदा के लिए ऊपर उठ जाता है। रविदास कहते हैंरू जिसे मनुष्य खोजता है, वह बिंदु स्वयं एक बूंद है, और वही बूंद समुद्र के समान है। जो अपने भीतर खोज करता है, वही उस दिव्य बूंद का ज्ञान प्राप्त करता है।[6] जीवात्मा रूपी बूंद, परमात्मा रूपी महासागर का केवल एक अंश है। केवल आंतरिक आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति के परिणामस्वरूप ही संत की जीवात्मा-रूपी बूंद, महासागर-रूपी परमात्मा में विलीन होकर उससे एकाकार हो जाती है। इस बूंद और महासागरकृअर्थात् जीवात्मा और परमात्माकृका ज्ञान केवल प्रबुद्ध संतों को ही प्राप्त होता है। बच्चन सिंह के अनुसार, ष्यह तथ्य कि कर्तव्यनिष्ठ ब्राह्मण भी श्रद्धापूर्वक रैदास को प्रणाम करते हैं, भक्ति आंदोलन की उस धारा की ओर संकेत करता है जिसके प्रबल प्रवाह में जाति-भेद की दीवारें कुछ सीमा तक टूट गई थीं।[7] निर्गुण परंपरा के संतों की भाँति संत रैदास भी अपनी रचनाओं के माध्यम से तीखी आलोचनाएँ प्रस्तुत करते हैं। किंतु सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर कबीर के प्रहार उनके स्वभाव के अनुरूप अधिक तेजस्वी, प्रखर और निर्भीक प्रतीत होते हैं, जबकि रैदास की वाणी शांति, संयम और विनम्रता से युक्त है। कुछ स्थानों पर संत रैदास की राम-कल्पना कबीर के राम से मिलती-जुलती प्रतीत होती है। इसी कारण उनकी भक्ति में निर्गुण भक्ति का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। वे कहते हैं- रविदास कहते हैं। हमारे प्रभु राम दशरथ के पुत्र नहीं हैं। राम हमारे भीतर व्याप्त हैं और समस्त प्रभु-परिवार में निवास करते हैं।8 किन्तु उनकी अधिकांश रचनाओं में वैष्णव भक्ति अर्थात् सगुण भक्ति का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। वे कृष्ण को कृष्ण तथा विष्णु को चक्र सुदर्शन जैसे पदों के माध्यम से संबोधित करते हैं। जिस पर दीनों के स्वामी अपनी कृपा बरसाते हैं। गरीब सुदामा को उन्होंने अपने समान बना लिया; मेरी आँखों से आँसू बहते हैं। रैदास कहते हैंरू कृष्ण के नाम का जप करने से, उस संबंध के द्वारा मनुष्य का उद्धार हो जाता है।9 रक्षक का सुदर्शन चक्रकृकोई भी बाधा या विपत्ति उसे एक क्षण के लिए भी रोक नहीं सकती।10 रैदास अपने संपूर्ण दर्शन में, आरंभ से अंत तक, हमें परम सत्ता के एक अद्वितीय भक्त और प्रेमी के रूप में दिखाई देते हैं। उनकी वाणियाँ ईश्वर के प्रति भक्ति और प्रेम से ओत-प्रोत हैं। चूँकि उनकी भक्ति का केंद्र प्रेम है, इसलिए इसे 'प्रेम भक्ति' कहा जाता है। वे 'श्रीमद्भागवत' में वर्णित 'नवधा भक्ति' (नौ प्रकार की भक्ति) के प्रत्येक रूप को स्वीकार करते हैं। संत रैदास काम, क्रोध, अहंकार, मोह, लोभ और इसी प्रकार की प्रवृत्तियों को मनुष्य के पाँच प्रमुख दोष मानते हैं। इन पाँच विकारों के कारण मनुष्य भक्ति से विमुख हो जाता है और परम सत्ता के प्रभाव से दूर हो जाता है। इनका उपचार 'सत्संग' (सज्जनों की संगति) में निहित है। ये पाँच विकार केवल मनुष्यों को ही नहीं, बल्कि पशु-पक्षियों सहित सभी जीवित प्राणियों को प्रभावित करते हैं।

काम भ्रम है, क्रोध भ्रम है, लोभ भ्रम है, मोह भ्रम है।

असंख्य भ्रमों को काट डालोकृमुझे पार लगा दो।[11]

रैदास की रचनाओं में उनके विषय-वस्तु अर्थात भाव-पक्ष पर कलात्मक रूप की अपेक्षा अधिक बल दिया गया है। अपने भावों और विचारों को व्यक्त करने के लिए उन्होंने सरल और स्वाभाविक भाषा का प्रयोग किया,

IARJSET ISSN (O) 2393-8021, ISSN (P) 2394-1588

International Advanced Research Journal in Science, Engineering and Technology

Impact Factor 8.066 ⁜ Peer-reviewed & Refereed journal ⁜ Vol. 13, Issue 7, July 2026

DOI: 10.17148/IARJSET.2026.13726

विशेष रूप से ब्रज भाषा के व्यवहारिक रूप का, जिसमें अवधी, राजस्थानी, खड़ी बोली, उर्दू और फ़ारसी के शब्दों का भी सुंदर समन्वय मिलता है। अंततः, डॉ. नगेंद्र के अनुसार, हम कह सकते हैंरू ष्मध्यकालीन संतों में रैदास या रविदास का एक विशिष्ट स्थान है। यद्यपि उनका जन्म निम्न सामाजिक वर्ग में हुआ था, फिर भी अपने श्रेष्ठ जीवन-चरित्र, उत्कृष्ट आध्यात्मिक साधना और आदर्श आचरण के कारण वे भारतीय धार्मिक और आध्यात्मिक परंपरा के इतिहास में आज भी सम्मानपूर्वक स्मरण किए जाते हैं।12

इसे सीमित क्यों किया गया और क्यों? 5. एक बात जिसने हमें सबसे अधिक पीड़ा पहुँचाई है, वह यह हैरू रैदास साहिब ने क्यों कहाकृ "मैं सुंदर राजा के वियोग के कारण दुखी हुआ" और "मैं ऐसा राज्य चाहता हूँ जहाँ सबको भोजन मिले, जहाँ सभी छोटे-बड़े समान रूप से सुख और शांति से रहें।" हमारे विचार में अब तक गुरु रैदास पर लिखी गई पुस्तकों में किसी लेखक ने उनकी राजनीतिक समझ पर चर्चा नहीं की। सभी ने उन्हें केवल सामाजिक या धार्मिक सुधारक के रूप में प्रस्तुत किया। राधास्वामी प्रेस जैसे प्रकाशनों ने उनमें केवल ईश्वर-भक्ति खोजने का प्रयास किया। शुक्ल, चतुर्वेदी और शर्मा ने जो लिखा, उसे तोते की तरह याद करके दोहराया। यह अत्यंत दुखद है। जब हमने पहली बार इस पद को पढ़ा, तो विश्वास नहीं हुआ कि भारत के हजारों दलित प्रोफेसर आज तक इसका सही अर्थ नहीं समझ पाए। बाबा साहेब का पहला संदेश है शिक्षित बनो, शिक्षित बनो, शिक्षित बनो। शिक्षित होने का अर्थ केवल प्रमाण-पत्र लेना नहीं है। बाबा साहेब ने कहा थाकृ गुलाम को बता दो कि वह गुलाम है, वह स्वतंत्रता के लिए विद्रोह करेगा। इसका अर्थ केवल किसी गुलाम को यह बताना नहीं है कि वह गुलाम है।

हमारे विचार में ये शब्द साधारण रूप से नहीं कहे गए थे। इस पद के पीछे गहरा विचार और संदेश छिपा है। जिस समय दलितों का समाज की मुख्य धारा में आना भी पाप माना जाता था, उस समय उनसे राज्य की मांग करना एक आश्चर्यजनक बात थी। सभी विद्वानों, विशेषकर दलित लेखकों को गुरु रैदास के ऐसे पदों पर अवश्य विचार करना चाहिए। गुरु रैदास अन्य दलित संतों से दो कारणों से अलग हैं। पहला, उन्होंने दलितों को अपना खोया हुआ "राज्य" वापस प्राप्त करने और बेगमपुरा स्थापित करने का आह्वान किया। दूसरा, जिन लोगों ने उन्हें माराकृउनके समकालीन संत कबीर और समान विचार रखने वाले अन्य संतकृवे उनके धार्मिक भाई थे। उन्होंने अपने वचनों से ब्राह्मणवाद पर गुरु रैदास से भी अधिक तीखा प्रहार किया, फिर भी गुरु रैदास की हत्या कर दी गई। यह विचार करने का विषय है कि उन्होंने ऐसा क्या कहा या किया कि ब्राह्मणों को उन्हें मारने के बाद ही संतोष मिला। ऐसा क्यों हुआ? दलित चिंतकों को इस विषय पर अवश्य शोध करना चाहिए।

हमारे विचार में उनकी हत्या के दो कारण थे। पहला, उन्होंने क्षत्रिय महिला मीरा को दीक्षा दी। मीरा को दीक्षा देकर उन्होंने वह कार्य किया जिससे दलितों को सदियों से वंचित रखा गया थाकृज्ञान देने और फैलाने का अधिकार। मीरा को दीक्षा देकर उन्होंने ब्राह्मणों के "सर्वोच्च" होने के दावे को चुनौती दी और उनकी आजीविका पर भी प्रहार किया। उस समय की स्थिति की कल्पना करें जब किसी दलित का स्कूल के पास से गुजरना भी अपराध माना जाता था; ऐसे समय में उन्होंने क्षत्रिय महिला मीरा को दीक्षा देने का साहस किया। उनका यह कार्य किसी क्रांति से कम नहीं था। दलितों को शहरों और गाँवों में रहने तक का अधिकार नहीं था, उस समय अपना राज्य मांगना वास्तव में साहस का कार्य था। गुरु रैदास जानते थे कि दलितों का कल्याण केवल दो चीजों से हो

IARJSET ISSN (O) 2393-8021, ISSN (P) 2394-1588

International Advanced Research Journal in Science, Engineering and Technology

Impact Factor 8.066 ⁜ Peer-reviewed & Refereed journal ⁜ Vol. 13, Issue 7, July 2026

DOI: 10.17148/IARJSET.2026.13726

सकता है। पहला ज्ञान प्राप्त करना और दूसरा राजनीतिक शक्ति प्राप्त करना। बाबा साहेब का दलितों की मुक्ति का मंत्र शिक्षित बनो, संगठित हो और संघर्ष करो वास्तव में गुरु रैदास का ही संदेश था। बाबा साहेब ने दलितों को तथाकथित ऊँची जातियों के बराबर मतदान का अधिकार दिया और गुरु रैदास के उस स्वप्न को पूरा करने की नींव रखी जिसमें उन्होंने दलित राज्य और बेगमपुरा की स्थापना की बात कही थी। दलितों की संख्या तथाकथित ऊँची जातियों से बहुत अधिक है। जब संख्या अधिक है तो उनके वोट भी अधिक हैं। इसलिए सत्ता जल्द ही उनके पास लौटेगी। इसे कोई नहीं रोक सकता!! यह नियति है!! सभी को यह जानना चाहिए। दलितों तक पहुँचाने का एक छोटा प्रयास है। शायद यह कहना गलत नहीं होगा कि इस दिशा में हमारा प्रयास अपने प्रकार का पहला प्रयास है। किसी भी क्रांति को दबाने के लिए "साम, दाम, दंड, भेद" की नीति अपनाई है। ऋषि दधीचि से लेकर गांधी तक यह नीति चलती रही। इसी नीति के द्वारा उन्होंने रैदास और अंबेडकर जैसे अनेक लोगों को समाप्त किया। इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं कि दलितों के पूर्वजों के हत्यारे माने जाने के बावजूद राम आज भी असंख्य दलितों द्वारा भगवान के रूप में पूजे जाते हैं। उन्होंने अपने ही लोगों से देश छोड़ने को कहा, जबकि बाबा साहेब को श्रम मंत्री बनाया गया। आज वही गांधी दलितों के मुक्तिदाता कहलाते हैं। गुरु रैदास और अन्य दलित संतों के बारे में भ्रमित करने वाली कहानियाँ फैलाईं ताकि लोग उनकी वास्तविक शिक्षाओं को भूल जाएँ और व्यर्थ की कथाओं में फँसे रहें। प्रचार व्यवस्था पर उनका नियंत्रण है, इसलिए वे अपने विचार आसानी से लोगों तक पहुँचा पाते हैं। इस पुस्तक में हमने ब्राह्मणवादी विचारकों द्वारा संत रैदास के व्यक्तित्व के चारों ओर बनाई गई झूठी छवि को हटाने का प्रयास किया है। भारत में दलित विद्वानों की कमी नहीं है। हमें पूरा विश्वास है कि चालाक सदियों से छिपाए गए सत्य को वे अवश्य सामने लाएँगे। दलित संतों के ज्ञान का सूर्य के बादलों के पीछे अधिक दिनों तक छिपा नहीं रह सकता। हमें विश्वास है कि सतगुरु रैदास का बलिदान व्यर्थ नहीं जाएगा। आज गुरु रैदास के रक्त से लाखों योद्धा निकल रहे हैं। अब वे उनकी अंतिम विजय की ओर बढ़ रहे हैं। इस विजय को कोई नहीं रोक सकता।

सन्दर्भ

[1]. शुक्ल, आचार्य रामचंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, विजय प्रकाशन मंदिर प्रा लिमिटेड, वाराणसी, संस्करण 2015, पृ.सं. 69

[2]. वर्मा, रामकुमार, हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, भारती प्रकाशन लोकभारती प्रकाशन, संस्करण जनवरी 2010, पृ.सं. 320

[3]. सिंह, इंद्रराज, संत रविदास, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार दूसरा संस्करण 1999, पृ.सं.43

[4]. सिंह, डॉ शुकदेव (संपादक), रैदास बानी, राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2003, पृ.सं. 159

[5]. सिंह, इंद्रराज, संत रविदास, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, दूसरा संस्करण, 1986, पृ.सं. 100

[6]. उपाध्याय, काशीनाथ, संत दादू दयाल, जगदीशचंद्र सेठी, सेक्रेटरी राधा स्वामी सत्संग व्यास, पंजाब सातवां संस्करण 2003, पृ.सं. 251

© IARJSET This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License

IARJSET ISSN (O) 2393-8021, ISSN (P) 2394-1588

International Advanced Research Journal in Science, Engineering and Technology

Impact Factor 8.066 ⁜ Peer-reviewed & Refereed journal ⁜ Vol. 13, Issue 7, July 2026

DOI: 10.17148/IARJSET.2026.13726

[7]. आजाद, आचार्य पृथ्वीसिंह, युग प्रवर्तक संत गुरु रविदास दीपक पब्लिशर्स, माई गेट जालंधर, प्रथम संस्करण जनवरी 1983, पृ.सं. 202

[8]. सिंह, बच्चन, हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, 16वां संस्करण 2022 पृ.सं.93

[9]. 4. सिंह, डॉ शुकदेव (संपादक), रैदास बानी, राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2003, पृ.सं. 110

[10]. वही, पृ.सं. 108

[11]. गौतम मीरा, गुरु रविदास वाणी एवं महत्व, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2003, पृ.सं. 288.

© IARJSET This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License